ख़ुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौस-ए-आ'ज़म का

इमदाद कुन, इमदाद कुन, अज़ रंज-ओ-ग़म आज़ाद कुन
दर दीन-ओ-दुनिया शाद कुन, या ग़ौस-ए-आ'ज़म दस्त-गीर !

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

अज़ल से हाथ में दामन है आया ग़ौस-ए-आ'ज़म का
करम से सिलसिला हम ने है पाया ग़ौस-ए-आ'ज़म का
'अदम से रब ने शैदाई बनाया ग़ौस-ए-आ'ज़म का
ख़ुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौस-ए-आ'ज़म का
हमें दोनों जहाँ में है सहारा ग़ौस-ए-आ'ज़म का

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

बनी किस के सबब हर बात है ! बग़दाद वाले के
हवाले किस के अपनी ज़ात है ! बग़दाद वाले के
हमारा साथ किस के साथ है ! बग़दाद वाले के
हमारी लाज किस के हाथ है ! बग़दाद वाले के
मुसीबत टाल देना काम किस का ! ग़ौस-ए-आ'ज़म का

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

शह-ए-जीलान ! दे कर ये ख़ुशख़बरी ग़ुलामों को
ब-रोज़-ए-हश्र भी राहत 'अता कर दी ग़ुलामों को
रहेगी क्यूँ भला अब कोई बेचैनी ग़ुलामों को
'मुरीदी ला-तख़फ़' कह कर तसल्ली दी ग़ुलामों को
क़यामत तक रहे बे-ख़ौफ बंदा ग़ौस-ए-आ'ज़म का

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

मोहब्बत से नवाज़ा जाएगा उन के ग़ुलामों को
ये कह दो, क़ादरी था क़ादरी हूँ क़ादरियों को
बुलाया जाएगा इक सिम्त सारे ख़ुश-नसीबों को
निदा देगा मुनादी हश्र में यूँ क़ादरियों को
कहाँ हैं क़ादरी ? कर लें नज़ारा ग़ौस-ए-आ'ज़म का

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

सुलूक अच्छा रखो मुझ ग़ौस-ए-आ'ज़म के दीवाने से
किनारा-कश रहा हूँ मुद्दतों सारे ज़माने से
मुझे अब हश्र में तुम क़ादरी इन'आम पाने से
फ़रिश्तो ! रोकते क्यूँ हो मुझे जन्नत में जाने से
ये देखो हाथ में दामन है किस का ! ग़ौस-ए-आ'ज़म का

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

तमामी देख लो इक बार जब मेरे जनाज़े को
ऐ प्यारो ! कर चुको सब प्यार जब मेरे जनाज़े को
बना लो ख़ूब ख़ुश्बूदार जब मेरे जनाज़े को
'अज़ीज़ो ! कर चुको तय्यार जब मेरे जनाज़े को
तो लिख देना कफ़न पर नाम-ए-वाला ग़ौस-ए-आ'ज़म का

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

अनोखा है, निराला है मेरे ग़ौस-उल-वरा का दर
चला इस दर रईस अशरफ़ की निस्बत जामी भी ले कर
फ़िदाई है जहाँ जिस का, ग़ुलामी जिस की है बेहतर
जमील-ए-क़ादरी ! सौ जाँ से हो क़ुर्बान मुर्शिद पर
बनाया जिस ने हम जैसों को बंदा ग़ौस-ए-आ'ज़म का

शैअल-लिल्लाह, या 'अब्द-अल-क़ादिर !
साकिन अल-बग़दाद या शैख़ अल-जीलानी !

कलाम:
मौलाना जमील-उर-रहमान क़ादरी

तज़मीन:
सय्यिद जामी अशरफ़

ना'त-ख़्वाँ:
राओ ब्रदर्स
सय्यिद जामी अशरफ़